फ्रिज के अंदर की सभा

सरीषा मलिक, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, मोहाली, कक्षा 10 ए

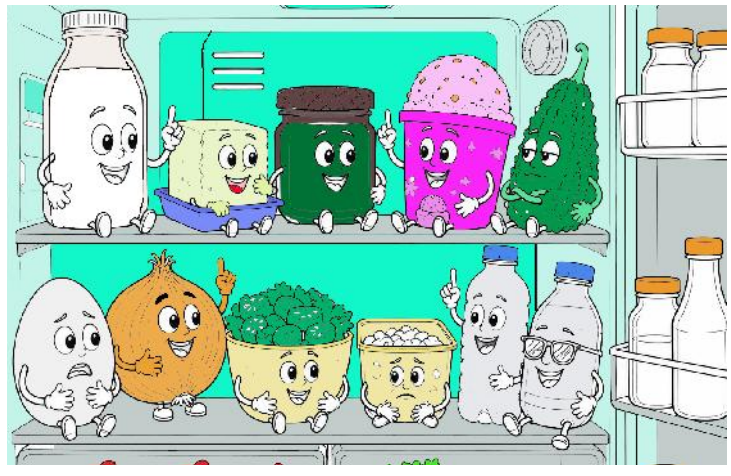

रात होते ही रसोई में रखा फ्रिज धीरे-धीरे चमकने लगा। जैसे ही घर के सभी लोग सोए, फ्रिज के अंदर रखी चीजों की रोज की सभा शुरू हो गई। सबसे पहले दूध ने लंबी साँस लेते हुए कहा, "आज तो बहुत थक गया हूँ। सुबह से तीन बार चाय में जा चुका हूँ। इंसानों को चाय से इतना प्यार क्यों है?"

कोने में बैठा मक्खन मुस्कुराया और बोला, "कम से कम तुम्हें सम्मान तो मिलता है। मुझे तो हर बार चाकू से काट दिया जाता है।"

सुनकर जैम हँस पड़ा, "तुम्हारी ज़िंदगी फिर भी अच्छी है। मेरी हालत देखो, बच्चे मेरा ढक्कन ठीक से बंद ही नहीं करते। टेढ़ा पड़ा हूँ।"

तभी ऊपर वाली ट्रे से आइसक्रीम ने इतराते हुए कहा, "तुम सब बहुत शिकायत करते हो। असली स्टार तो मैं हूँ। फ्रिज खुलते ही सबसे पहले सबकी नजर मुझ पर जाती है।"

पीछे से करेला बोला, "हाँ, क्योंकि तुम मीठी हो। हमें तो देखकर लोग फ्रिज ही बंद कर देते हैं।"

पूरा फ्रिज हँसी से गूँज उठा।

अंडा थोड़ा घबराकर बोला, "दोस्तों, लगता है मेरा समय पास आ रहा है। सुबह मम्मी ऑमलेट बनाने की बात कर रही थीं।"

सलाद का बचा हुआ प्याज तुरंत बोला, "डरो मत! कम से कम तुम्हें खास नाश्ते में जगह मिलेगी। मुझे तो काटते ही सब रोने लगते हैं।"

तभी बची हुई सब्जी उदास होकर बोली, "तुम सबकी बातें सुनकर अच्छा लगता है। मैं तो पिछले तीन दिनों से यहीं पड़ी हूँ। अब तो खुद मुझे भी याद नहीं कि मैं कौन-सी सब्जी हूँ।"

सभा दो मिनट मौन रही। फिर पानी की बोतल बोली, "एक बात बताऊँ? कल रात कोल्ड ड्रिंक और आइसक्रीम देर तक बातें कर रहे थे।"

आइसक्रीम तुरंत शर्माकर बोली, "अरे चुप रहो! पूरी सभा के सामने क्या बोल रहे हो?"

फ्रिज में ठहाके गूँज उठे। अचानक फ्रिज का दरवाजा खुला। सभी चीजें तुरंत अपनी-अपनी जगह पर शांत हो गईं। छोटा भाई आधी नींद में पानी लेने आया था।

जैसे ही दरवाजा बंद हुआ, दूध धीरे से बोला, "सभा जारी रखी जाए?"

और फिर पूरी रात फ्रिज के अंदर हँसी-मजाक चलता रहा। जी टी

हमारी चेयरपर्सन मैम

मीनांसिका मिश्रा, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, साकेत, कक्षा 3 ए

हमारी चेयरपर्सन मैम,
ज्ञान का दीप जलाती हैं।
अपने मधुर वचनों से,
हमको राह दिखाती हैं।

जब भी हम घबराते हैं,
वह हिम्मत बन जाती हैं।
छोटी-छोटी कथाओं से,
सदा उत्साह बढ़ाती हैं।

सुंदर-सुंदर श्लोक पढ़ा,
संस्कार हमें सिखाती हैं।
माँ जैसी ममता देकर,
सबके मन को भाती हैं।

हिन्दी की झंकार

अयांश अग्रवाल, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, गुरुगाम सैक्टर 46, कक्षा 3 ए

हिन्दी मीठी, हिन्दी प्यारी,
सब भाषाओं में है न्यारी,
शब्द-शब्द में फूल खिले,
जैसे बगिया में फुलवारी।

क ख ग की प्यारी टोली,
बोले मीठी-मीठी बोली,
सुनकर इसकी मधुर मिठास,
खुश हो जाए हर एक टोली।

हिन्दी सूरज, हिन्दी चंदा,
हिन्दी अपना तिरंगा झंडा,
इसके दम से चमके भारत,
जैसे दिलदार राजा। जी टी

अमिताशा का पन्ना

समय अनमोल है

परी, अमिताशा, सैक्टर 46, गुरुग्राम, कक्षा 7

बीता हुआ पल वापस न आए,
समय की कीमत कोई न बताए,
जो समझे इसका मोल निराला,
जीवन उसका बन जाए उजाला।

बीता हुआ पल वापस न आए,
समय की कीमत कोई न बताए,
सुबह की किरण बोले उठ जा,
सपने बुनने का यही है मौका।

मोबाइल रख दे किताब उठा ले,
कल तेरा होगा आज ठान ले,
टाल-मटोल से कुछ न होगा,
कल, कल करके कल चला जाएगा।

बड़े-बड़े लोग यही बताते,
समय गँवाया फिर पछताते
तू मत करना यह भूल दोबारा,
हर मिनट तेरा है सबसे प्यारा।

पढ़ ले, लिख ले कुछ बन जा तू,
वक्त की सिकंदर बन जा तू।

हिन्दी का गौरव

खुशी उप्पल, अमिताशा, नौएडा, कक्षा 5

भाषा है एक सेतु, जो दिलों को जोड़ती,
हिन्दी है भाषा हमारी, जो पहचान बनाती,

अलग-अलग बोलियों में, एकता का सुर मिले,
भाषा से बढ़े बंधन, जब हम सब मिलें।

हिन्दी वह धरोहर, जो संस्कारों में बसी,
मातृभाषा की शक्ति, हर दिल में जगी,
जब हम बोलते हैं 'हिन्दी', गर्व से भरा मन,
हर कदम पर चमके, हमारी पहचान का धन।

स्कूल की राहों में, हिन्दी का गान गाएँ,
सपनों की उड़ान में, हम इसे भी साथ लाएँ,
भाषा से बनते हम, एकता के सूत्रधार,
हिन्दी में बहे प्यार, भाषा का हो विस्तार।

आज का दिन हम मनाएँ, हिन्दी-दिवस को गौरव से,
भाषा से जुड़ें हम, हर जीवन में हर सफर में,
हमारी हिन्दी, हमारी शक्ति, हमारी पहचान,
भाषा से बने बंधन, हम रहें एक समान।

बेटी

रोजी, अमिताशा, नौएडा, कक्षा 7

गुड़िया सी लगती है वो,
सबके मन को भाती है वो,
बहन, नानी, दादी, मामी, मौसी-जैसे,
न जाने कितने रिश्ते निभाती है वो।

कभी माँ बनकर, बच्चों को लोरी सुनाती,
तो कभी पत्नी बनकर, पत्नी धर्म निभाती है वो,
हर दुख-दर्द सह लेती है वो,
न करती है किसी से कोई शिकायत।

वो बेटी ही तो होती है, जो अपने परिवार के खातिर,
अपने जीवन की हर खुशी को न्यौछावर कर देती है,
लोगों को लगता है, बहुत कमजोर होती हैं बेटियाँ,
पर समय आने पर शक्ति का रूप बन जाती हैं बेटियाँ।

परिवार पर बोझ नहीं, उसकी शान हैं बेटियाँ,
समस्त संसार को चलाने वाली,
अधर्म और दुष्टों का अंत करने वाली,
नौ देवियों का स्वरूप कहलाती हैं बेटियाँ।

केवल सुंदर या धन-संपत्ति नहीं,
खुशियों का भंडार लाती हैं बेटियाँ,
बड़े नसीब वाले होते हैं वो लोग,
जिनके घर आती हैं बेटियाँ।